

कंप्यूटर के प्रति छात्रों का गुणात्मक

Ajay Kumar Yadav^{1*}, Dr. Rakesh Kumar Mishra²

¹ Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

² Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - माध्यमिक विद्यालय का स्तर किशोरावस्था के दौरान आता है और स्कूल छोड़ने की अवधि में भी। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है, कि स्कूली छात्र अकादमिक रूप से सकारात्मक प्रभाव देने के लिए इस परिचालन गैजेट के लिए एक आवश्यकता के रूप में उच्च स्तर का ज्ञान और कौशल प्राप्त करें, हालांकि इस मुद्दे पर अध्ययन करने की आवश्यकता है कि क्या कंप्यूटर शिक्षा का वास्तव में प्रभाव हो सकता है या हो सकता है। छात्रों का शैक्षणिक क्षेत्र। वह अवधि जब छात्र महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं कि अध्ययन की कौन सी धारा उच्च अध्ययन के लिए चुनेगी। चाहे वह कला, विज्ञान, वाणिज्य या व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में हो। इस सभी पहलुओं को देखते हुए कंप्यूटर शिक्षा आवश्यक कौशल प्रदान करती है और जहां इसकी दक्षता कंप्यूटर साक्षर होने या यहां तक कि इसमें भविष्य के कैरियर के रूप में चुनने के मामले में एक आवश्यकता बन गई है।

कीवर्ड- कंप्यूटर, छात्र, गुणात्मक, कंप्यूटर शिक्षा

-----X-----

परिचय

कंप्यूटर और संबंधित प्रौद्योगिकियां अब देश भर के लगभग हर स्कूल में हैं। राज्य सुधार प्रयासों में पाठ्यक्रम मानकों में प्रौद्योगिकी का एकीकरण शामिल है और कभी-कभी छात्रों को प्राप्त करने के लिए प्रौद्योगिकी कौशल को एक अलग मानक बनाते हैं। इस संबंध में, शिक्षा कार्यक्रमों और उनकी सामग्री को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। (1) स्कूलों में नई तकनीकों का उपयोग कंप्यूटर के साथ एक संवादात्मक वातावरण बनाने की अनुमति देता है, जो बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही, स्कूलों में प्रौद्योगिकी के आसपास के विचार विविध हैं। स्कूली शिक्षा की चुनौतियों के लिए उन्हें बेहतर तरीके से तैयार करने और उच्च अध्ययन की तेजी से प्रतिस्पर्धी दुनिया के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में सक्षम बनाने के लिए स्कूली शिक्षा में एकीकृत करने के लिए आवश्यक सभी के लिए एक स्टॉप सॉल्यूशन में स्कूलों के लिए एक व्यापक कौशल प्रदर्शनों की सूची। कंप्यूटर की मदद से छात्र अधिक सीख सकते हैं और वे अपनी तार्किक समस्याओं को बहुत आसानी से और भारी गति से हल कर सकते हैं। कंप्यूटर आधारित शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक प्रतिस्पर्धी रोजगार बाजार में संपत्ति होगी

इसलिए कंप्यूटर आधारित शिक्षा पर उच्च माध्यमिक स्तर पर जोर दिया जा रहा है और इस स्तर पर इसका तेजी से विस्तार हो रहा है। (2)

शिक्षा के क्षेत्र में कंप्यूटर

आधुनिक युग में कंप्यूटर एक बहुत ही शक्तिशाली उपकरण है। कंप्यूटर की तकनीक रचनात्मक सोच विकसित करके कई समस्याओं को हल करने में मददगार हो सकती है। कंप्यूटर छात्रों के साथ-साथ शिक्षक के लिए निर्देश का एक बहुमुखी उपकरण है। शिक्षक भी कंप्यूटर का उपयोग करके अपने शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सकते हैं और छात्र कंप्यूटर की सहायता से अधिक सीख भी सकते हैं। शैक्षिक संस्थानों में कंप्यूटर का उपयोग कई नौकरियों के लिए किया जा सकता है जो हर दिन किए जाते हैं। कंप्यूटर का उपयोग जटिल गणना और सूचना तक सीमित नहीं है।

छात्रों के साथ कंप्यूटर का उपयोग करने के लाभ

कंप्यूटर के लाभों को नकारा नहीं जा सकता। इसे ठीक ही वैज्ञानिक ज्ञान कहा जाता है। इसने कई तरह से मानव मन का स्थान लिया है। इसने हमें गणना के नीरस कार्य

से मुक्ति दिलाई है। छात्रों के साथ कंप्यूटर का शिकार होने के फायदे उतने ही हैं जितने छात्र कंप्यूटर के साथ बहुत आसानी से सीख सकते हैं। वे जैसा चाहते हैं, वैसा ही प्रदर्शन बरकरार रखते हैं। छात्रों के जवाब देने के लिए कंप्यूटर का इंटरफ़ेस किया जा सकता है। निर्देश कंप्यूटर प्रोग्राम प्रत्येक छात्र को उसके प्रदर्शन के बारे में तत्काल प्रतिक्रिया प्रदान कर सकता है। (3) इन सॉफ्टवेयर का उपयोग करके कई प्रकार के सॉफ्टवेयर पैकेज उपलब्ध हैं, छात्र अपनी रचनात्मकता के स्तर को बढ़ा सकते हैं। कंप्यूटर निर्देश में, एक छात्र को सामग्री क्षेत्रों के लिए तत्काल मूल्यांकन रिपोर्ट और प्रतिक्रिया मिलती है। इसमें विषय सामग्री भरी हुई है और यह शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को सिखाता है, कंप्यूटर आधारित शिक्षा के माध्यम से छात्र सीखने के पहलुओं के कार्य को लेने के लिए स्वयं रुचि और आत्म प्रेरणा विकसित कर सकते हैं। छात्र पारंपरिक पेपर वर्क की तुलना में कंप्यूटर के साथ काम करने में अधिक समय दे सकते हैं। छात्र कंप्यूटर पर इंटरनेट का उपयोग करके नए विचार खोज सकते हैं।

कंप्यूटर शिक्षकों के लिए सहायक उपकरण के रूप में

कंप्यूटर से शिक्षक अपना काम आसान और तेज कर सकते हैं। कंप्यूटर वर्धित निर्देश शिक्षा में कंप्यूटर का बेहतर तरीके से उपयोग करने का परिचय देता है। एक शिक्षक अपने शिक्षण में कंप्यूटर निर्देश, पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन, स्प्रेडशीट और वीडियो टेप का उपयोग कर सकता है। एक शिक्षक स्लाइड शो का उपयोग करके अपनी सामग्री को बेहतर तरीके से प्रस्तुत कर सकता है। शिक्षक कंप्यूटर पर पाठ योजना तैयार कर सकते हैं और प्रिंटर की मदद से वे अपनी टाइप की गई सामग्री को प्रिंट कर सकते हैं। वे कंप्यूटर का उपयोग करके अपना समय और पैसा बचा सकते हैं। (4)

मनोवृत्ति

मनोवृत्ति एक निश्चित दिशा या स्थिति के प्रति सकारात्मक, नकारात्मक या तटस्थ प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति या प्रवृत्ति है। व्यवहार कई गुणों से बना है। इन महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक रवैया है। किसी का व्यवहार उसके वातावरण में चीजों- विचारों, व्यक्ति या वस्तु के प्रति उसके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। किसी व्यक्ति का संपूर्ण व्यक्तित्व और विकास उसके दृष्टिकोण के चरित्र से प्रभावित होता है। (5)

स्वभाव या मनोवृत्ति के लक्षण

मनोवृत्तियों की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- अभिवृत्तियों का विषय-वस्तु संबंध होता है।
- अभिवृत्तियाँ सीखी जाती हैं अंतर्निहित नहीं।
- अभिवृत्तियाँ तत्परता की पुनः सक्रिय रूप से स्थायी अवस्थाएँ हैं
- अभिवृत्तियों में प्रेरक-भावात्मक विशेषताएं होती हैं
- अभिवृत्तियाँ उतनी ही असंख्य और विविध होती हैं जितनी उत्तेजनाओं के प्रति वे प्रतिक्रिया करते हैं
- मनोवृत्ति अत्यधिक सकारात्मक से लेकर अत्यधिक नकारात्मक तक होती है।

मनोवृत्ति के निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक

मनोवृत्ति निर्विवाद रूप से एक अर्जित स्वभाव है और इसलिए सीखने या अनुभवों के अधिग्रहण द्वारा वातानुकूलित है। अभिवृत्तियों के निर्माण में आनुवंशिकता कारक की कोई भूमिका नहीं होती है। पर्यावरणीय बल एक व्यक्ति को विभिन्न दृष्टिकोणों को बनाने और विकसित करने में मदद करता है। किसी भी स्तर पर एक दृष्टिकोण अनिवार्य रूप से किसी के पर्यावरण की बातचीत का एक उत्पाद है। (6)

स्वयं व्यक्ति के भीतर कारक:

सभी व्यक्ति समान परिस्थितियों में समान रूप से प्रतिक्रिया नहीं करते हैं। कुछ पूर्वाग्रहों को प्राप्त करने में पर्यावरणीय उत्तेजनाओं का प्रभाव एक बच्चे के विकास और विकास के पैटर्न से बहुत अधिक प्रभावित होता है। ये विकास कारक शारीरिक विकास और विकास, बौद्धिक विकास, भावनात्मक विकास, सामाजिक विकास और नैतिक और नैतिक विकास हैं।

व्यक्ति के पर्यावरण के भीतर कारक

उनके विकास और विकास के पैटर्न के कारण उनकी विभिन्न व्यक्तित्व विशेषताओं द्वारा दिखाए गए व्यक्तिगत भिन्नताओं के अलावा, रवैया काफी हद तक उस समूह से उधार लिया जाता है जो किसी के वातावरण के लिए होता है, जिसके लिए किसी की मजबूत निष्ठा होती है। पर्यावरणीय कारक घर, पारिवारिक और सामाजिक वातावरण हैं। समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन, चलती-फिरती तस्वीरों, प्रचार साहित्य और विज्ञापन के रूप में जनसंचार माध्यम भी दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति इन एजेंसियों के माध्यम से व्यक्त किए गए विचारों से अपनी पहचान बनाने की प्रवृत्ति रखते हैं। (7)

कंप्यूटर आधारित शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण

कंप्यूटर आधारित शिक्षा के प्रति एक व्यक्ति का दृष्टिकोण विभिन्न पहलुओं से प्रभावित होता है, जैसे, कंप्यूटर के उपयोग से संबंधित सामाजिक मुद्दे, कंप्यूटर पसंद, कंप्यूटर आत्मविश्वास, या आराम। इसे कंप्यूटर पर व्यक्ति की प्रतिक्रिया और जिस स्थिति से यह संबंधित है, उसके अनुभव के माध्यम से आयोजित तत्परता की मानसिक स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है। सामान्य तौर पर, दृष्टिकोण को "किसी दिए गए वस्तु के संबंध में लगातार अनुकूल या प्रतिकूल तरीके से प्रतिक्रिया करने के लिए एक सीखी हुई प्रवृत्ति" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। वे व्यक्तित्व लक्षणों की तुलना में अपेक्षाकृत कम स्थिर होते हैं और पर्यावरण के साथ व्यक्ति की बातचीत (रॉबिन्सन, सिम्पसन, ह्यूफनर, और हंट, 1991) के आधार पर दोनों स्थितियों में और समय के साथ बदला जा सकता है। फोर्सियर (1996) के अनुसार कंप्यूटर शिक्षक आधारित निर्देश को बाल केंद्रित निर्देश में बदलने में मदद करता है और शैक्षिक चक्र में कई खुफिया वातावरण प्रदान करता है और इसने शैक्षिक संदर्भ में मानव संपर्क को बढ़ाया है।

कंप्यूटर आधारित शिक्षा के प्रति रचनात्मकता और दृष्टिकोण

कंप्यूटर हमें रचनात्मक प्रयास का समर्थन करने के लिए दो अलग-अलग तरीके प्रदान करते हैं। पहला तो बस हमारे दिमाग को पूरक करना है। चूंकि यह भविष्यवाणी करना सामान्य रूप से असंभव है कि मौलिक संचालन में परिवर्तन आकस्मिक व्यवहार को कैसे प्रभावित करेगा, कंप्यूटर सैद्धांतिक रूप से परिणामों का अनुकरण कर सकते हैं।⁽⁸⁾ इस प्रकार निम्न स्तर के बिल्डिंग ब्लॉक्स के हेरफेर से जुड़े कुछ जोखिम को कम किया जा सकता है। दूसरा विकल्प कंप्यूटर के अंदर ही क्रिएटिविटी को विकसित करना है। मल्टी-एजेंट सिस्टम का उपयोग करके सिस्टम मॉडलिंग आगे बढ़ने का एक तरीका है। जैसा कि गोल्डबेनबर्ग (1999) के अध्ययन में, कंप्यूटर व्यवस्थित रूप से विवरण में तत्वों को समान तत्वों से बदल सकते हैं, जिससे उनके मामले में, नए विज्ञापन हो सकते हैं। इसी तरह एजेंटों को कुछ निर्धारित तरीके से समान लोगों द्वारा प्रतिस्थापित करने से उपन्यास की गतिशीलता प्राप्त हो सकती है।

कंप्यूटर शिक्षा की आवश्यकता और महत्व

शिक्षा में कंप्यूटर शिक्षा का उपयोग वर्षों से किया जा रहा है और सरकार प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए बड़ी मात्रा में धन स्वीकृत करती है। हालाँकि, यह अभी भी एक बहस का मुद्दा है कि क्या कंप्यूटर तकनीक छात्रों के सीखने के परिणामों में फर्क करती है। विनर एंड मोथे (1987) का विचार है कि स्कूल छोड़ने वाले छात्र अपने जीवन के हर चरण में कंप्यूटर से मिलेंगे; उनसे निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए। स्कूल में प्राप्त अनुभव की सीमा और गुणवत्ता निश्चित रूप से कंप्यूटर के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है और कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एक और अधिक प्रतिस्पर्धी रोजगार बाजार में एक संपत्ति होगी। इस प्रकार, स्कूल कंप्यूटर कौशल के लिए प्रशिक्षण देते हैं क्योंकि यह एक मौलिक पहुंच है और उन्हें 21 वीं सदी की शिक्षा और कार्यक्षेत्र के डिजिटल तरीकों के लिए सक्षम बनाता है। कंप्यूटर शिक्षा का एक और पहलू है जो पहुंच और 21वीं सदी के तरीकों के ज्ञान के साथ अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। विबर्ग (1991) शिक्षा में शिक्षकों के दृष्टिकोण से प्रौद्योगिकी के उपयोग की जांच करता है। सामग्री दर्शाती है कि छात्रों को इस गैजेट के उपयोग के बारे में क्या पता होना चाहिए, शिक्षकों की उनकी भूमिकाओं के बारे में परिवर्तन, नई मूल्यांकन विधियों और कंप्यूटर आधारित पाठ्यक्रमों के विकास के बारे में। लेख में प्रौद्योगिकी के महत्व और प्रौद्योगिकी के आधार पर शिक्षकों की परिवर्तनशील भूमिका दृष्टि में पाठ्यक्रम शामिल हैं।⁽⁹⁾ मैडक्स, जॉनसन एंड विलिस (1997) शिक्षा में कंप्यूटर की भूमिका को दर्शाता है, कि शिक्षा में कंप्यूटर की भूमिका के अलावा, कंप्यूटर की समाज और स्कूलों में विशेष भूमिका है। तकनीकी सफलता और परिवर्तन के साथ, कंप्यूटर समाज और शिक्षा में एक शक्तिशाली स्थान बन गए हैं। काम करने की गति, दक्षता, शक्ति और कार्य गतिविधियों से मानवीय त्रुटि को दूर करने की अवधारणा हमें प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर पर तेज करने के लिए प्रेरित करती है। कंप्यूटर शैक्षिक संदर्भ में मानव संपर्क को बढ़ाते हैं। इसलिए; शैक्षिक कंप्यूटिंग एक रोमांचक नया अनुशासन है जिसकी प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करेगी कि प्रशिक्षण में आज के शिक्षक भविष्य में अपनी कक्षाओं में कंप्यूटर का उपयोग कैसे करते हैं।

भारत में कंप्यूटर शिक्षा

भारत में दुनिया की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है। भारत के विभिन्न राज्यों में 1.4 मिलियन निजी और सरकारी स्कूलों के साथ स्कूली शिक्षा क्षेत्र और भी बड़ा है। इंडिया

इंफ्रास्ट्रक्चर रिपोर्ट, 2012 के अनुसार माध्यमिक स्तर पर सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) 63% था। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) के संयुक्त उद्यम के रूप में भारत सरकार द्वारा छठी पंचवर्षीय योजना के तहत 1984 में स्कूलों में कंप्यूटर साक्षरता और स्कूलों में अध्ययन (कक्षा) नामक एक पायलट परियोजना के माध्यम से हमारे देश में स्कूलों में कंप्यूटर साक्षरता की शुरुआत की गई थी। और इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग(10) समिति का गठन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), एनसीईआरटी, सीबीएसई और केंद्रीय विद्यालय संगठन के सदस्यों द्वारा किया गया था। समिति को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, छात्रों के लिए पाठ्यक्रम और अन्य प्रस्तावित शैक्षणिक गतिविधियों का विवरण तैयार करने के लिए सौंपा गया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में कहा गया है कि "कंप्यूटर महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी उपकरण बन गए हैं, कंप्यूटर के लिए न्यूनतम जोखिम और उनके उपयोग में प्रशिक्षण व्यावसायिक शिक्षा का हिस्सा बन जाएगा। 1986 की ये पुनरीक्षण सहायता एक नई परिघटना है लेकिन यह हमारी भारतीय स्कूल प्रणाली में कंप्यूटरों के उपयोग की शुरुआत थी। (11)

भारत में नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय बैठक (1992) में इसने अपनी बहुउद्देश्यीय उपयोगिता के कारण विभिन्न क्षेत्रों में कंप्यूटर के महत्व पर जोर दिया। इसलिए स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक बदलती तकनीक के साथ तालमेल बिठाते हुए कंप्यूटर शिक्षा की समग्रता में आवश्यकता थी। विशेषज्ञ बैठक ने सिफारिश की कि पहली से आठवीं कक्षा तक कंप्यूटर शिक्षा शुरू की जाए। लगभग 80 प्रतिशत समय कंप्यूटर के साथ सीखने के लिए और 20 प्रतिशत समय कंप्यूटर के बारे में जानने के लिए समर्पित होना चाहिए; 8 वीं कक्षा से पहले, निर्देश गैर-मौखिक हो; 9वीं और 10वीं कक्षा में 50 प्रतिशत समय कंप्यूटर सीखने के लिए समर्पित होना चाहिए; और 10वीं और 12वीं कक्षा के बीच कंप्यूटर शिक्षा को एक वैकल्पिक विषय के रूप में पेश किया जाए। इसने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि हार्डवेयर पाठ्यक्रम के लिए पर्याप्त होना चाहिए और उस स्तर के लिए उपलब्ध सभी सॉफ्टवेयर को चलाने में सक्षम होना चाहिए। हाल के वर्षों में 2001 में पूरे देश में शुरू किए गए सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) के तहत प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को लाने के लिए, यह कंप्यूटर शिक्षा के महत्व पर जोर देता है। (12)

निष्कर्ष

घर में इंटरनेट की सुविधा वाले कंप्यूटर का स्कूल की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक संबंध हो सकता है। हालांकि यह माता-पिता और अभिभावकों की सहमति से लिया जाना है। चूंकि माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में इंटरनेट का परिचय शामिल है, इसे घर पर शैक्षिक उद्देश्यों के लिए लागू किया जा सकता है लेकिन केवल समय, लागत और शैक्षिक उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए। सही खोजने के लिए, कक्षा के छात्रों को इंटरनेट पर समीक्षा पढ़ने पर शिक्षकों, परामर्शदाताओं, सहपाठियों के साथ बात करके पहले से पढ़ाया जाना चाहिए। हालांकि, छात्रों ने जिस प्रकार के स्कूलों में भाग लिया, उनके दृष्टिकोण में अंतर दिखाई दिया। सकारात्मक कंप्यूटर शिक्षा दृष्टिकोण वाले छात्रों की उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ा। जिस प्रकार के स्कूल बोर्ड में छात्र ने भाग लिया, उसका कंप्यूटर के प्रति रवैये पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

संदर्भ

1. ठाकुर, सोना और अजय कुमार (2015)। सामाजिक-भावनात्मक स्कूल जलवायु के संबंध में किशोरों के बीच अकादमिक चिंता, विज्ञान और अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (आईजेएसआर), खंड 4 अंक 11।
2. चामुंडेश्वरी, एस। (2015)। इमोशनल इंटेलिजेंस, स्कूल एनवायरनमेंट एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ स्टूडेंट्स, एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, वॉल्यूम 2, अंक 2।
3. चामुंडेश्वरी, एस। (2015)। इमोशनल इंटेलिजेंस, स्कूल एनवायरनमेंट एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ स्टूडेंट्स, एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, वॉल्यूम 2, अंक 2।
4. अल्मिगबल, तुर्की एच। (2015)। मेडिकल छात्रों और अकादमिक उपलब्धि की सीखने की शैली की प्राथमिकताओं के बीच संबंध, सऊदी मेडिकल जर्नल, खंड 36, संख्या 3।
5. सिद्दीकी, ऐ शा, अनम अब्बास, फराह रियाज और रिजवान नजीर (2014)। लिंग और शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर छात्रों की अवधारणात्मक सीखने की शैली की प्राथमिकताओं की एक जांच, पाकिस्तान जर्नल ऑफ लाइफ एंड सोशल साइंसेज, वॉल्यूम 12, नंबर 1।
6. युसोफ मुहमे, अरुणोदय बर्मन, रोसनिजा अब्द। और अजीज और युस्निजा (2014)। लर्निंग

- स्टाइल अवेयरनेस एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ स्टूडेंट्स, साउथ ईस्ट एशियन जर्नल ऑफ मेडिकल एजुकेशन वॉल्यूम। 8 नंबर 1।
7. मनिबो, जोविलीन, मार्कएनरिक आर.अबांटे, बैजी सी.अलमेंद्रल, जे-रेनई- मननसलाब (2014)। लर्निंग स्टाइल्स एंड फैक्टर्स अफेक्टिंग द लर्निंग ऑफ जनरल इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च इन प्रोग्रेसिव एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, वॉल्यूम। 3, नंबर 1।
8. बेनीपाल, अमृतपाल सिंह और सिंह जसपाल (2014)। पंजाब में कक्षा पर्यावरण की उनकी धारणा के संबंध में किशोरों की अकादमिक उपलब्धि, शिक्षा कॉन्फैब, वॉल्यूम। 3, नंबर 7।
9. बर्मन, अरुणोदय, रोसनिजा अब्द। अजीज, और युस्निजा मुहम्मद युसुफ (2014)। लर्निंग स्टाइल अवेयरनेस एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ स्टूडेंट्स, साउथ ईस्ट एशियन जर्नल ऑफ मेडिकल एजुकेशन वॉल्यूम। 8 नंबर
10. नारायणी, के. और देवी गोमती (2014)। उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में उच्चतर माध्यमिक छात्रों की सीखने की शैली, वैज्ञानिक और अनुसंधान प्रकाशन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड 4, अंक 4।
11. ठक्कर, महेश (2014)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सीखने की उपलब्धि पर सीखने की शैलियों का प्रभाव, वॉयस ऑफ रिसर्च वॉल्यूम 3 अंक 3।
12. टैंक, एच. डॉ. (2014)। स्कूलों के लिए पूर्ण कौशल समाधान। डिजिटल लर्निंग। फरवरी 2014:23।

Corresponding Author

Ajay Kumar Yadav*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur
M.P.